माननीय राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का जीवाजी विश्वविद्यालय के

दीक्षांत समारोह कार्यक्रम में उद्बोधन

स्थान :- ग्वालियर, दिनांक :- 09 नवम्बर, 2012 समय :- 11.30 बजे

जीवाजी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के शुभअवसर पर इतने युवाओं को दीक्षित होते हुए देख मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं। दीक्षान्त समारोह मेरी नजर में एक भावनात्मक अनुबंध है। छात्र अपने अध्ययन की पूर्णता पर कुलगुरू के समक्ष सन्मार्ग पर चलते हुए देश सेवा की शपथ लेता है। भारतीय संस्कृति का सर्वोपरि लक्ष्य 'सर्वेभवन्तु सुखिन:' सन्मार्ग पर चलने से ही प्राप्त हो सकता है। यहाँ सामूहिक रूप से आदर्शों के प्रति निष्ठा और उसी के अनुरूप पूर्ण मनोबल से प्रयासों की आवश्यकता है।

आज भारतीय परिदृश्य में इस बात की महती आवश्यकता है कि ज्ञानवान व विद्या से परिपूर्ण युवा अपनी उर्जा को देश के उस निम्न तबके तक पहुंचाये जहां इसकी आवश्यकता है। आप जैसै युवा पूर्णमन से प्रयास करें तो ये विशाल जनसंख्या एक विशाल व सक्षम मानव संसाधन में परिवर्तित हो सकती है। हम विश्व रंगमंच पर अपने तिरंगे को सबसे ऊपर प्रतिस्थापित करना चाहते हैं तो अपने प्राकृतिक संसाधनों, अपनी नैसर्गिक क्षमताओं को विवेक के साथ सुनियोजित कर विशाल जनसमुदाय की सहभागिता से भागीरथी प्रयास करने होंगे और इसमें युवाओं की भूमिका अहम होगी।

मैं विद्यार्थियों से कहना चाहूंगा कि अर्जित ज्ञान को आत्मसात करके भारतीय संस्कृति के प्रति पूर्ण आस्था के साथ चिंतन से ही हम भारतीय जीवन शैली को समझ सकते हैं। हमारे पूर्वजों ने प्रकृति से तारतम्य बनाने वाली दिनचर्या व संस्कारों का सृजन किया है इसे समझ कर अपनाने की आवश्यकता है। सांस्कृतिक संक्रमण के इस दौर में अपने संस्कारों के प्रति निष्ठा आवश्यक है।

हमारी जीवन शैली प्रकृति के अनुकूल है इसलिये सर्वोच्च है। भारतीय संस्कृति के प्रति पूर्ण विश्वास हमारे युवा साथी आने वाले समय में अपनी नैतिक जिम्मेदारियों को बखूबी निभायेंगे।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य यही है कि विद्यार्थियों के अन्दर विद्यमान समस्त क्षमताओं को उभारना और उन्हें पोषित करना। शिक्षा में शिक्षकों का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। अपने ज्ञान

व प्रेरणा से विद्यार्थियों को उनके विषय क्षेत्र में समर्थ उनका दायित्व है। भारतीय संस्कृति में गुरू की प्रेरणा को ऊर्जा का स्त्रोत माना गया है। मैं प्राध्यापकगणों से कहना चाहूंगा कि विषय ज्ञान के साथ चरित्र निर्माण एवं देश के प्रति कर्तव्य परायणता का बोध भी छात्रों को अवश्य कराये तभी हम विकास के नवीन सोपान प्राप्त कर पायेंगे।

मैं शोधार्थियों से कहना चाहूंगा कि विश्व ज्ञान गंगा की प्रमुख तीन शाखाओं प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी पर समान रूप से शोध कार्यों की आवश्यकता है क्योंकि मानव जीवन में इन तीनों का अलग-अलग महत्व है। ये एक दूसरे के पूरक है।

मानव जीवन को आनन्दमय बनाने में तीनों की महती भूमिका है। मैं विद्यार्थियों को परामर्श देना चाहता हूं कि आपने जो शपथ यहाँ ली है उसे अपने मन मस्तिष्क में दृढ़ता से बिठायें। आपके जीवन के उतार-चढ़ाव में एवं विपरीत परिस्थितियों में उच्च आदर्शों के प्रति पूर्ण निष्ठा बनाये रखने में यह शपथ आपको सम्बल प्रदान करेगी और आप अपने विकास पथ पर निरन्तर बढ़ते रहेंगे तभी जीवाजी विश्वविद्यालय का ध्येय वाक्य विद्यया प्राप्यते तेज: आपके जीवन में पूर्ण रूप से सार्थक सिद्ध होगा।

एक बार पुन: उपस्थित प्रबुद्धजनों, अभिभावकों शिक्षकगणों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई और भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिन्द।